1st International Conference on Multidisciplinary Research (ICMR-2018)
NIILM University, Kaithal, Haryana, (India)
4th-5th August 2018 www.conferenceworld.in ISBN:978-93-87793-38-5

गांधी जी का ग्राम स्वराज्य एवं स्वाध्याय : एक अध्ययन

डॉ. सुशील कुमारी,

सहायक प्रोफेसर, सामाजिक शिक्षा,

मिनर्वा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, तरावड़ी (करनाल)

महात्मा गांधी दार्षनिक अराजकतावादी थे। उन्होंने अपने भाषणों व लेखों के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया था, कि एक ऐसे अंहिसक समाज की नीव रखनी होगी, जो इस प्रकार की भावना को जन्म देगा, जो सबके लिए कल्यानकारी होगा।(1)

भारतीय स्वतन्त्रता अन्दालेन के समय गाधी जी ने अनके गाँवों का दौरा किया था और ग्रामीणों की समस्याओं को बहुत करीब से देखा, समझा और परखा था, वे कहते थे कि ''उस आजादी का कोई मूल्य नहीं हैं जिसमें सबसे पीड़ित और कमजोर को मुक्ति न मिले

और वह यह न महसूस करे कि वह उसका देष है''। सत्य और अंहिसा की पूर्णता ग्रामीण जीवन की सादगी में ही प्राप्त की जा सकती है।(2)

गांधी जी ने विषेष तौर पर वर्तमान पचांयती राज को अपने चिंतन एवं विचारों के माध्यम से सदियों बाद पुर्नप्रतिष्ठित किया। हालांकि किसी भी आदर्ष समाज में वे राज्य के अस्तित्व के विरोधी थे, लेकिन वे जानते थे कि आदर्ष एवं व्यावहारिक्ता में जमीन आसमान का अन्तर होता है इस लिए उन्होंने व्यावहारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए स्पष्ट किया था कि संसार में कहीं भी बिना सरकार के राज्य का अस्तित्व नहीं है।(3) गांधी जी ने कहा कि यह आदर्ष

समाज तभी साथर्क भूमिका निभा सकता है, जब इसमे सत्ता विकेन्द्रीकरण को मूल आधार बनाया जाए। आदर्ष जनतन्त्र को लगभग स्वावलंबी स्वाषासित सत्ताग्राही ग्राम समाजों के रूप में तैयार किया जाए स्वेच्छा के आधार पर अहिंसक समाज में संघ और समुदायों का निर्माण किया जाए।(4) गांधी जी ने कल्पना की कि आदर्ष जनतन्त्र लगभग स्वाबलम्बी और स्वषासित सत्याग्रही ग्राम समाजों का संघ होगा। उन्हीं के षब्दों में–''अंहिसा पर आधारित समाज गांवों में बसे हुए ऐसे समुदायों का ही हो सकता है जिनमें स्वेच्छापूर्ण सहयोग सम्मानपूर्ण और षान्तिमय जीवन की षर्त है।'' गांधी जी ने आदर्ष ग्राम समुदायों का अपने लेखों में संक्षिप्त वणर्न किया।

उन्होंने लिखा कि प्रत्येक गांव पूरे अधिकार से सम्पन्न एक पंचायत या जनतन्त्र होगा। प्रत्येक गांव स्वावलम्बी होगा और इस योग्य होगा कि वह अपने मामलों का प्रबन्ध यहां तक कर सके कि सम्पूर्ण संसार से अपनी रक्षा भी स्वयं कर ले। बाहरी आक्रमण के विरुद्ध अपनी रक्षा करने के प्रयत्न में उसे भरने की षिक्षा मिलेगी और वह इसके लिए तैयार रहेगा। अनगिनत गांवों से बने इस सामाजिक संगठन मे व्यक्ति ग्राम के लिए और ग्राम ग्राम–समुदायों

के लिए मरने को तैयार रहेगा। इन ग्राम समाजों का प्रत्येक कार्य यथासंभव सहकारिता के आधार पर होगा। इस आदर्ष समाज के प्रत्यके व्यक्ति के लिए अपनी विषिष्ठ समता के अनुसार समाज–सेवा करने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी। यह समाज कृषि प्रधान होगा और ग्रामीण सभ्यता को अपनाएगा। षोषण, पँजूीवाद और मालिक–नौकर के कृत्रिम सम्बन्धों का अभाव होगा। उत्पादन ग्रामीण ऐसे सादे औजारों और मषीनों का स्वागत होगा, जो बेकारी बढ़ाए लाखों ग्रामीणों के बोझ को हल करते है और जिनको गावों के निवासी स्वयं बना सकते हैं और प्रयोग में ला सकते हैं। यह समाज स्वदेषी के आदर्ष को

अपनाएगा और इतना स्वावलम्बी होगा कि षायद हो उसको दूसरे देषों से व्यापार करना पड़ेगा। आदर्ष समाज में न तो यातायात के भारी साधन होंगे न वकील और न कचहरियाँ होगी, न आजकल के से डाक्टर और न दवाइयाँ होगी, न बड़े नगर होंगे। अहिंसक मनुष्यों में गंभीर झगड़े ही बहुत कम होंगे और जो होगे भो उनका निपटारा आपसी विवचेना से तथा समझाने बुझाने से कभी–कभी पंचायतों से और यदि ये साधन काफी न हो, तो अहिंसक प्रतिरोध से हो जाएगा। जीवन सरल, प्राकृतिक और संयमित होने से आज के अनेक रोगों का भी भय न रहेगा और जो छोटी–छोटी बीमारियां रह जाएंगी, उनके इलाज के लिए प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियां होगी।(5) गाँधी का ग्राम–स्वराज्य यानि जिसमें ऐसे गाँव की बात करते हैं, जो हर व्यक्ति का राज्य हो तथा हर एक को अपना लगता हो। ऐसा राज्य जो सब प्रकार की मर्यादाओं, निरंकुशताओं से मुक्त हों, ऐसा राज्य जो शद्ध नैतिक सत्ता के आधार पर स्थापित हो तथा राज्य ऐसा हो तो समानता पर आधारित है। यह राज्य एक किसान की आवश्यकताओं को भी उतना ही पूर्ण करता हो जितना कि किसी धनवान जमींदार की, यहाँ जाति, धर्म व दर्जे का कोई भेदभाव न हो। गाँधी जी सर्वोदय के माध्यम से समाज में सुख शांति स्थापित करना तथा मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना चाहते थे। सर्वोदय में परिवार को व्यापक रूप से अंगीकार किया जाता है तथा हर व्यक्ति अपने परिवार को लाभान्वित करते के साथ–साथ समाज को भी लाभान्वित करें। आपसी ईर्ष्या, स्वार्थ आदि अवगुणों को समाप्त कर प्रेम, सहयोग शान्ति से इस प्रकार कार्य करना चाहिये, जिसमें समाज की उन्नति हो सके। इस समाज में सब व्यक्ति अपना विकास कर सकते हैं। यह समाज प्रम अंहिसा पर आधारित होगा जिसमें तुच्छ स्वार्थों का कोई स्थान नहीं होगा। इसमें न ऊँच–नीच का, छोटे बड़े का, न जात पात का, न

अमीर गरीब का भेद रहेगा।[6] गाँधी जी ग्राम स्वराज्य के अंतर्गत एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जो एक शोषणविहीन, समाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से आर्थिक रूप से समान हो। व्यक्तिगत सम्पत्ति भले ही मनुष्य रखे, किन्तु उस सम्पत्ति का प्रयोग निजी स्वार्थ के लिये न करके सम्पूर्ण समाज के हित में करें। उन्होंने अपने ग्रामीण स्वराज्य के निर्माण में हृदय परिवर्तन को महत्त्वपूर्ण मानते हुए इसे मनुष्य की आन्तरिक शक्ति के रूप में स्वीकार किया और पूंजीपति वर्ग को कुटुम्ब की भांति देख–रेख करने का मार्ग दिखलाया।[7] महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज्य की व्यवस्था के अंतर्गत साधन और साध्य के महत्त्व को प्रतिष्ठित करते हुए कहा कि मैं न किसी वाद का प्रवर्तक बनना चाहता हूँ न किसी धर्म का गुरु और न किसी वाद का प्रवर्तक बनना चाहता हूँ न किसी धर्म का गुरु और न किसी मठ का महंत बनने की मेरी लालसा है। मैं जो बात कह रहा हूँ वहीं सत्य का अंतिम रूप है और उन्होंने यह भी कहा कि सत्य के सम्बन्ध में उनका कहना ही अन्तिम निर्णय है। सत्य पर अडिग रहने के साथ–साथ गाँधी का ईश्वर की सत्ता में भी पूर्ण विश्वास था उनका ग्राम स्वराज धर्मविहीन नहीं था। उनका विश्वास था कि सम्पूर्ण विश्व का संचालन नियामक ईश्वर ही है।[8] गांधी जी ने ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करने के पश्चात् उनकी समस्याओं को गहराई से समस्या और उसके समाधान भी ढूंढते थे। भारत जैसे कृष प्रधान देश में बढ़ते हुए निजीकरण और निर्धनता से छुटकारे के लिये विकेन्द्रित अर्थनीति की बात कही, एक ऐसी व्यवस्था जो एक सम्पूर्ण इकाई बने, जो मनुष्य को मशीनों का दास न बनाए। मशीनें मनुष्य की सहायकता हो 'स्वामिनी' नहीं। गाँधी जी कहते हैं कि मशीनों से काम लेना उसी अवस्था में अच्छा होता है, जब किसी निर्धारित काम को

करने के लिए आदमी बहुत कम हो। पर यह हिन्दुस्तान में है ही नहीं यहाँ काम के लिए आदमी चाहिए उससे अधिक तो बेकार पड़े हुए हैं।[9]

बेकारी घटाने के लिए गाँधी जी कुटीर लघु उद्योग पर बल देते थे गाँधी जी बड़े उद्योगों के विरोधी नहीं थे, पर देश में कृषि की स्थिति व पूंजी की कमी के कारण खेती व कुटीर उद्योगों पर बल दिया।[10] इस प्रकार उन्होंने एक आदर्श समाज की कल्पना की, लेकिन व्यवहार में यही आशा प्रकट की कि हम उस आदर्श की ओर पहुंचने का प्रयत्न करें, ताकि एक ऐसी स्थिति पर आ सके जो हमारे लिए कल्याणकारी थे। गांधी जी इस बात को समझते थे कि जिस समाज की वे कल्पना करते हैं, वह तभी बन सकता है, जब मनुष्य पूरी तरह से आत्म संयमी बन जाए और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन बिना राज्य के अनुशासन के करने लगे, पर इतना आत्म संयम मनुष्यों के बस की बात नहीं है। परन्तु फिर भी उन्होंने इस बात की आशा व्यक्त की कि यदि लोग इस प्रकार के समाज के लिए निरन्तर कार्य करते रहे, तो धीरे–धीरे ऐसे समाज का उदय इस सीमा तक हो सकता है, जो लोगों के लिए कल्याणकारी हो। उनका यह भी विचार था, "यदि ऐसे समाज का कभी आविर्भाव होगी, तो वह भारत में ही होगा, क्योंकि केवल भारत ही ऐसा देश है, जहाँ इस प्रकार का प्रयास हुआ है। उस ओर कम करने का मार्ग है मृत्यु के भय का पूर्ण परित्याग।[11] गाँधी कायह कथन पूरा सत्य हुआ मालूम पड़ता है। जब हम स्वाध्याय के बारे में पढ़ते हैं या स्वाध्यायी क्षेत्रों में जाकर उनके प्रयोगों को आत्मिक तौर पर अनुभव करते हैं। क्योंकि जिस अहिंसक समाज या ग्राम स्वराज्य की कल्पना गांधी जी ने की थी, उसका निर्माण बिल्कुल इसी जीवन में हुआ है पाण्डुरंग शास्त्री जी को पढ़ते हैं तो अनुभव होता है कि जो गाँधी को

पढ़ते हैं या उनसे प्रेरणा पाते हैं तथा गाँधी के सपनों का अपना सपना बनाए हुए हैं, वे स्वाध्याय में उसका साकार रूप पाते हैं।

स्वाध्याय का जन्म भारतीय जनगण की सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति के प्रति पाण्डुरंग शास्त्री की गहरी संवेदना से 1954 में हुआ था। इन्हें लोग प्यार से दादा जी कहते हैं।[12] उन्होंने अपने प्रयासों से स्वाध्यायी क्षेत्रों में ऐसे कार्यक्रम चला रखे हैं जो कहीं न कहींगांधी की याद दिलाते हैं चाहे वे अस्पृश्यता के बारे में हो, निर्धनता या गाँव की साफ सफाई हो या लघु कुटीर उद्योग धंधों के बारे में, नशाबंदी हो या गीता के सिद्धान्तों पर चल कर एक ऐसे समाज का निर्माण करना जो मानवता के सिद्धान्तों पर आधारित हो। परन्तु इन सबके लिए जैसा कि स्वाध्याय कहता है कि इंसान स्वयं को बदले, स्वचेतना जिसको जगाना ही स्वाध्याय का प्रयास है। उससे जुड़ कर मनुष्य हमेशा दैवीय तत्त्व का अभिकर्त्ता बन जाता है। स्वयं को उससे मिला देता है उसी से अन्य से प्रति उसकी आत्मीयता और सौख्य की नींव तैया होती है तथा वह अपने सभी कार्य ईमानदारी से करने लगता है।[13] स्वाध्याय परिवार के अनेकानेक प्रयोग जैसे कि योगेश्वर कृषि, श्री दर्शनम, वृक्षमन्दिर, अमृतालयम, मत्स्यगन्धा, गोरस, हीरामंदिर आदि अनेकानेक भाव कर्मी की शृंखला कल्याणकारी समाज की आत्मनिर्भर रचना है। वहीं आज कल्याणकारी राज्य को हिंसक बनने से रोक सकते हैं और उसे अहिंसक बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, जिसका स्वप्न महात्मा गाँधी के द्वारा देखा गया था।

प्रस्तुत शोधपत्र में स्वाध्याय के उन्हीं कार्यक्रमों के बारे में बताया गया है जो कि गाँधी की ग्राम स्वराज्य की कल्पना के नजदीक है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिलता है। अहमदाबाद के भावनिर्झर में जो कि सैटेलाईट रोड पर स्थित है। जहाँ स्वाध्यायी परिवारों स जुड़े किसानों के बच्चे सातवीं से

बारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं। उसके पश्चात् दो वर्ष का तत्त्वज्ञान कोर्स के लिये ठाणे के तत्त्वज्ञान विद्यापीठ जाते हैं। सातवीं से पहले की निशुल्क शिक्षा कच्छ के वाढ़ाई और नलिया स्थित स्कूलों में दी जाती है। गुरुकुल की परिकलना पर आधारित इस व्यावहारिक शिक्षा का उद्देश्य निसंदेह स्वाध्याय के तपे तपाए शिक्षित कामरेड पैदा करना है। पूर्ण शिक्षित हो जाने के बाद ये छात्र अपने–अपने गांवों में लौट जाते हैं। गाँवों में जाकर केश तेज मंजन, साबुन बनाना, मोमबत्तियाँ, दीये, सुगन्धि, सुपारी आदि वस्तुएँ बनाकर घरेलू उद्योग धन्धों को प्रोत्साहित करते हैं। साथ ही साथ एक मात्र लक्ष्य स्वाध्यज्ञय का मंत्र लिए विभिन्न गाँवों में बिखर जाते हैं। वेद उपनिषद, गीता केज्ञान से भरपूर ये युवा कहीं दूर में महात्मा गांधी की याद दिला जाते हैं।[14]

स्वाध्याय परिवार भाव सम्बन्धों के आधार पर सहयोगी मानव सम्बोधन को विकसित कर रहा है वर्तमान कल्याणकारी राज्य के बाद की उन्नति समाज व्यवस्था का वह निर्माण और विकास कर रहा है। दादा के निर्मल नीर और कुआँ रिचार्ज सिस्टम गाँधी के गाँवों की कल्पना को साकार करता है। गांधी जी ने गाँवा को संकट से बचाने के लिए कुछ सुझाव भी दिए थे। उनका मानना था कि लोग गांवों के आसपास के जंगलों का विकास करे, जैविक खाद बनाए, नहरें खोदें। छोटी–छोटी योजनाओं से ऊर्जा पैदा करे, पीने के पानी की समुचित व्यवस्था करेंगे। हर काम के लिए सरकार की ओर दृष्टि ना लगाए रहें। अपने पर निर्भर रहना सीखें। अपनी जरूरत की चीजें खुद पैदा करे। पाण्डुरंग शास्त्री ने 1979 में बताया था कि बरसात का पानी बेकार चला जाता है हर गाँव में निर्मल नीर चाहिए। हर किसान को कुआँ रिचार्ज करना चाहिए। इसके लिए एक तालाब का निर्माण किया गया तालाब का निर्माण किया गया, तालाब में बारिश का पानी इकट्ठा किया जाता। इस पानी को फिल्टर करके ट्यूबवैल के

जरिए कुंए में पहुंचा दिया जाता। इससे यह लाभ हुआ कि जब बाकी देश पानी न बरसने पर पानी के लिए तरसता है तब स्वाध्याय से जुड़े हर गांव हरे–भरे रहते हैं। स्वाध्याय वाले गाँवों में पानी की हर समस्या मानो खत्म हो गई है। स्वाध्याय कार्य से व्यक्ति बदल रहे हैं और संस्थाएँ भी। स्वाध्यायी दूसरी तरह के समाज सेवकों से भिन्न है उसकी भावभूमि ही दूसरी है। वह एकल भाव से लोगों में जाता है उसका स्थाई प्रभाव भी बढ़ा है। महात्मा गांधी ने जीवन में सादगी तथा नैतिक स्वास्थ्य के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने की दृष्टि से नशीली वस्तुओं तथा द्रव्यों का विरोध किया। वे नशीले द्रव्यों के सेवन की व्यक्ति की नैतिक दुर्बलता का प्रतीक मानते थे। उन्होंने परिवार कल्याण की दृष्टि से मध निषेध को अपने सामाजिक रचनात्मक कार्यक्रम का अंग बनाया। यही कारण था कि गाँधी जी भारत मधरहित बनाना चाहते थे। अगर हम देखें तो सरकार करोड़ों रुपए इस आदत से मुक्ति पर खर्च करती है। समाज सेवी संस्थाएँ इस काम में लगी हैं। इसके बावजूद शराब पर राक लगाना मुश्किल हो गया है।[16]

लेकिन अगर स्वाध्यायी क्षेत्रों में जाकर उनका अवलोकन करें, तो पाएंगे कि स्वाध्याय ने व्यक्ति की अस्मिता जगाकर शराब छुड़ाई है। ऐसी ही एक कस्बा है गुजरात के बेरावल में जहाँ मछली का बड़ा कारोबार है। यहां पर स्वाध्याय का चमत्कार देखने लायक हो स्वाध्याय का स्वर्ग इनके संसार में उतरा अनन्त पीढ़ियों से जिनकी जिव्हा पर अभद्र शब्द थे, मुख से शराब की दुर्गन्ध आती थी, घर–घर में मछली और दारू का साम्राज्य था, ऐसे पिछड़े हुए मच्छीमारों में पाण्डुरंग जी पहुंचे तथा उनके विचार स्पर्श से उनके जीवन उज्ज्वल बन गए।

व्यसन नष्ट हो गए, असंस्कारों का नाता टूट गया, जवानों ने हथियार छोड़ पतवार उठा लिए और शराब छोड़कर समुद्र की छाती को फतेह करने निकल पड़े। इसी प्रकार अहमदाबाद में बाघरी समुदाय जो कि अपराध और शराब की कुलत के लिए कुख्यात रहा स्वाध्याय ने इस समदाय का जीवन बदला। हालांकि पाण्डुरंग ने कभी अपने प्रवचनों में यह नहीं कहा कि केवल वही व्यक्ति अस्वाध्यायी हो सकता है, जो सिगरेट शराब, जुआ, मांस यानी किसी भी प्रकार के व्यसन से परहेज रखता है, लेकिन आश्चर्य यही है कि स्वाध्यायी बनने पर तमाम तरह के व्यसन खुद ही मरने लगते हैं। उनका कारण यह है कि स्वाध्याय के कारण भगवान के साथ मनुष्य को अपना सम्बन्ध समझ में आने लगता है। सम्पूर्ण विश्व का निर्माता मुझ में आकर बसा है और मेरे साथ रहकर सुख–दु:ख को भोगता है। यह ज्ञान पवित्रता का बोध होते ही व्यसन मुक्ति अपने आप होने लगती है। महात्मा गाँधी जिनका धर्म ऐसा था जिसमें ऊँच–नीच, जाति भेद रंग भेद के लिए ढेरों स्थान न थे। गाँधी जी के इन विचारों का अनोखा संगम भी हमें स्वाध्याय में देखने को मिलता है। जहाँ पर हरिजन अपने आपको ब्राह्मण कहते हैं। वे सबकी बाकी तरह स्वाध्याय परिवार के सदस्य बन गए हैं।

निष्कर्ष :

इस प्रकार स्वाध्याय की प्रवृत्तियों को देखकर लगता है कि जिस सत्य की शिक्षा हमें गाँधी जी ने बहुत पहले दी थी। स्वाध्यायी अपने दैनिक जीवन में इसको व्यवहार में लाते हैं, जिसके बहुत प्रशंसनीय परिणाम निकले हैं। ये स्वाध्याय के ही प्रयत्न हैं, जिसके कारण हमारी संस्कृति को हर तरह के तबके को ऊपर उठाने की कोशिश की गई है तथा उस कोशिश को पूर्ण किया गया है। गाँधी जी जिस कल्याणकारी राज्य की बात करते थे, स्वाध्याय अपने प्रयासों

से वर्तमान कल्याणकारी राज्य के बाद की उन्नत समाज व्यवस्था का निर्माण कर रहा है। कल्याणकारी समाज का कल्याणकारी राज्य और कल्याणकारी समाज आपसी सद्भाव के बिना अपूर्ण या अहिंसक है। जिस आत्म निर्भर सुशासन अर्थात् लोकतांत्रिक राज्य के विकास की बात हम करते हैं वह हमारे गाँव पर टिका है, तो गाँव को सक्षम, सबल बनाने का स्वाध्याय एक सरल माध्यम है तथा जिस ग्राम साम्राज्य की कल्पना गांधी जी ने की थी उसे सार्थक होते देखता जा सकता है।

सन्दर्भ :

1. प्रताप सिंह, गांधी जी का दर्षन, रिसर्च पब्लिकेष्न, पृष्ठ 68.
2. डॉ. उषा मिश्रा, पंचायत राज एवम ग्रामीण विकास, पृष्ठ 62.
3. डा. अवस्थी एवम अवस्थी–भारतीय राजनैतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिषिंग जयपुर 1992, पृष्ठ 298–299.
4. डा. अवस्थी एवम अवस्थी–भारतीय राजनैतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिषिंग जयपुर 1992, पृष्ठ 298–299.
5. मोहन दास कर्म चन्द गांधी, मेरे सपनों का भारत नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, पृष्ठ 14.
6. श्रीमती षोभा षंकर, आधुनिक भारतीय समाजवादी चिंतन, साहित्य भवन प्रा. लि. 1980, पृष्ठ 86.
7. श्रीमती षोभा षंकर, आधुनिक भारतीय समाजवादी चिंतन, साहित्य भवन प्रा. लि. 1980, पृष्ठ 86, 88.
8. डा. प्रभाकर माचवे एवम सुरेन्द्र नारायण दफतुआर बिहार पटना, पृष्ठ 89–90.

9. वी वी तायल–भारतीय समाज एवम राजनोतिक, नैषनल पब्लिषिंग हाउस, पृष्ठ 9–10.
10. प्रताप सिंह : गांधी जी का दर्षन रिसर्च पब्लिकेषन, पृष्ठ 140.
11. प्रताप सिंह : गांधी जी का दर्षन रिसर्च पब्लिकेषन पृष्ठ 68.
12. गांधी मार्ग, पृष्ठ 12.
13. गांधी मार्ग, गोपाल कृष्ण गोखले, गांधी षांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली, पृष्ठ 13.
14. वही, पृष्ठ 34.
15. वही, पृ. 38.
16. वही, पृ. 37.